

Date - 09/02/24, Asst. Professor
Philosophy. Dr. Rajiv Ranjan Pandey

CBCS sem I - MJC - विपरीत

Mac class - विपरीत परिभाषा

tripolar class - Diagram

* TDCII - सर्वज्ञात

tubular class - संज्ञक शक्ति

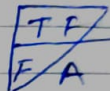
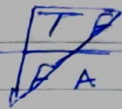
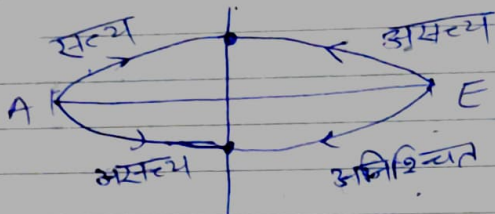
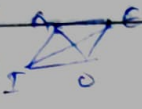
January 2015

विरुद्ध (contrary)

Essential Follow-up

Friday

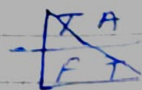
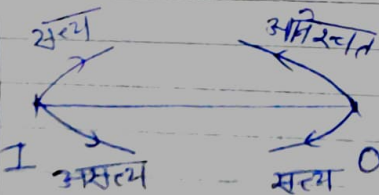
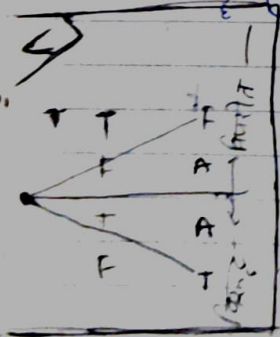
09



जब दो सामान्य तर्कवाक्य एक साथ सत्य हैं, किन्तु दोनों एक साथ असत्य हो सकते हैं।

$\neg A \rightarrow \neg B$ is **Not T** but maybe both **F**
 $A \rightarrow B$ (जुल का अंतर)

विरोध (subcontrary)

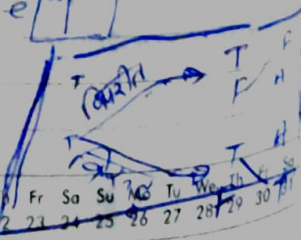


अब दो के विगेष तर्काक्य एक साथ असत्य नहीं होते
किन्तु दोनों सत्य हो सकते हैं, तब दो विरुद्ध
कहलाते हैं।

NO [F] but both may be [T]

$$I \rightarrow 0 \rightarrow (\text{अप्रतिरूप})$$

Formula both



उद्देश्य अवश्य होगा इसका कुछ आशय यह भी
निरुद्धता है कि वह उद्देश्य अभी तक पूरा नहीं हो
सका है। अर्थात् ईश्वर में अभी उसका आभाव है
आभाव से अपूर्णता व अपूर्णता से सीमितता आपादित
(Imperfection) होती है स्पष्ट है कि व्यक्तित्व पूर्ण। सगुण
ईश्वर की अवधारणा ईश्वर को सीमित एवं अपूर्ण रूप
में स्थापित करती है।

सदसंकल्प व्यक्तित्वपूर्ण → सदसंकल्पी (Goodwill) होगा



उद्देश्य →
पूरा नहीं

संक्षेप में

व्यक्तित्वपूर्ण → सदसंकल्प → उद्देश्य → अभी वह पूरा नहीं
↓
आभाव
↓
अपूर्ण
↓
सीमित

रिपनोजा के अनुसार ईश्वर पर व्यक्तित्व का आरोपण
करने पर ईश्वर सीमित हो जायेगा ईश्वर एक ऐसी
सत्ता है जिसे गुणों में बांधा नहीं जा सकता ईश्वर
सर्व है अतः उस पर किसी गुण या विशेषता का
आरोपण तर्कता संभव नहीं है क्योंकि अतीत गुण सीमित
एवं निषेधात्मक होते हैं ईश्वर पर ऐसे किसी सीमित गुणों
का आरोपण करना संभव नहीं है

ईश्वर की व्यक्तित्वपूर्ण अवधारणा में मानवत्व आरोपण
का दोष है यहाँ ईश्वर को मानव रूप में चित्रित करने
का प्रयास किया गया है परंतु ईश्वर पर मानवीय गुणों का
आरोपण करने पर मानवीय कामियाँ भी आने लगती हैं
इस संदर्भ में श्रीक दाशानिक जेनोफेनिज का कहना है कि